जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

7 फरवरी, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

प्रतिष्ठित विदुषी रीता कोठारी ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया में 11वां सरोजिनी नायडू वार्षिक स्मारक व्याख्यान दिया

सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र (एसएनसीडब्ल्यूएस), जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने प्रतिष्ठित 11वें वार्षिक सरोजिनी नायडू स्मारक व्याख्यान की मेजबानी की। प्रसिद्ध बहुभाषी विदुषी और अनुवादक प्रो रीता कोठारी ने 6 फरवरी, 2025 को दोपहर 2:30 बजे जामिया मिल्लिया इस्लामिया के मीर अनीस हॉल में "स्मृतियाँ और आंदोलन: फील्डवर्क और लैंगिक कथाएँ" शीर्षक से व्याख्यान दिया।

प्रख्यात शिक्षाविद और पूर्व राजदूत प्रो वीना सीकरी ने वार्षिक स्मारक व्याख्यान की अध्यक्षता की। स्वागत भाषण डॉ. सुरैया तबस्सुम ने दिया। सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र की मानद निदेशक प्रो निशात जैदी ने उद्घाटन भाषण दिया और वक्ता का परिचय कराया। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित सरोजिनी नायडू वार्षिक स्मारक व्याख्यान "भारत-कोकिला" की विरासत का सम्मान करना है। केंद्र प्रतिष्ठित विद्वानों के लिए महत्वपूर्ण नारीवादी, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों पर अंतर्दृष्टि साझा करने के लिए एक मंच के रूप में काम है। व्याख्यान ने लैंगिकता और सांस्कृतिक अध्ययनों के बारे में महत्वपूर्ण अकादमिक चर्चाओं को बढ़ावा देने के लिए सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र के समर्पण को रेखांकित किया। इसने भारतीय नृवंशविज्ञान के संदर्भ में लैंगिकता, भूगोल और पहचान के गतिशील प्रतिच्छेदन की जाँच के लिए एक मूल्यवान मंच प्रदान किया।

प्रो रीता कोठारी, जो वर्तमान समय में अशोक विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की प्रोफेसर और अशोक अनुवाद केंद्र की सह-निदेशक के रूप में कार्यरत हैं, ने इस महत्वपूर्ण शैक्षणिक कार्यक्रम में सांस्कृतिक अध्ययन एवं अनुवाद में अपनी ओर से व्यापक विशेषज्ञता ला चुकी हैं । उनके व्याख्यान ने गुजरात, कच्छ और सिंध में समुदायों के अध्ययन में नृवंशविज्ञान के अपने समृद्ध अनुभव से लैंगिकता, स्मृति और फील्डवर्क कथाओं के प्रतिच्छेदन की खोज की। उन्होंने इस बारे में चर्चा की कि किस प्रकार यह क्षेत्र न केवल लैंगिकता आधारित है बल्कि शोधकर्ता को लैंगिकता आधारित तरीके से भी सृजित करता है। उन्होंने गुजरात के बन्नी में रहने वाले सिंधी मुसलमानों के जीवन को जीवंत किया और यह कहते हुए बातचीत की शुरुआत की, "मौन एक अलग भाषा है जिसे महिलाएँ बोलती हैं।"

प्रो कोठारी के अकादमिक पोर्टफोलियो में कई प्रभावशाली कार्य शामिल हैं, जिनमें संपादित वॉल्यूम *ए मल्टीलिंगुअल नेशन* और मोनोग्राफ *द बर्डन ऑफ रिफ्यूज* और *अनईजी ट्रांसलेशन* शामिल हैं। इन कार्यों ने भारतीय उपमहाद्वीप में सांस्कृतिक अनुवाद और सामुदायिक पहचान को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

बातचीत के उपरांत सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र की मानद निदेशक प्रो. निशात जैदी ने व्यावहारिक टिप्पणियाँ कीं, जिसके बाद सत्र की अध्यक्ष प्रो. वीना सीकरी ने टिप्पणी की। डॉ. सुरैया तबस्सुम द्वारा दिए गए औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन हुआ।

व्याख्यान में विभिन्न विषयों के छात्रों और संकाय सदस्यों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। उपस्थित वरिष्ठ सदस्यों में प्रो मोहम्मद मुस्लिम खान, डीन, सामाजिक विज्ञान संकाय, प्रो. सुनीता जैदी, इतिहास की सेवानिवृत्त प्रोफेसर और मानविकी संकाय की पूर्व डीन, और पुरस्कृत उर्दू कथा लेखक डॉ. खालिद जावेद शामिल थे ।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया